Journal of Advances in Science and Technology
Vol. 16, Issue No. 1, March-2019, ISSN 2230-9659

अमृता प्रीतम का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

Kamini Chugh[1]* Dr. Madhubala Sharma[2]

[1] Research Scholer

[2] Research Supervisor, Sunrise University, Alwar, Rajasthan, India

सांराश - *अमृता प्रीतम साहित्य जगत् में एक ऐसी 'शख्सियत रही हैं जिनकी लेखनी ने भाषाओं की सीमाओं को तोड़ा और यह प्रमाणित किया कि लेखक की 'शैली भाषा, बोली देश की सीमाओं में बाँधी नहीं रहती। साहित्य में उनके द्वारा सृजित रचनाओं ने सभी वर्ग के पाठकों को आकर्षित किया। उनकी लेखन-'शैली पाठकों के कोमल मन पर सीधा प्रभाव छोडती है। अमृता प्रीतम हिन्दी साहित्य जगत में एक बहुचर्चित नाम है। साहित्य में उनके द्वारा सृजित रचनाओं ने पाठकों को काफी आकर्षित किया है। उनकी लेखन-'शैलीपाठकों के कोमल मन पर सीधा प्रभाव छोड़ती है। अमृता प्रीतम हिन्दी साहित्य मे एक बहुचर्चित नाम है। उनका बचपन और प्रारंभिक जीवन भले ही विभिन्न प्रकार की कठिनाईयों के साथ गुजरा है और उन्हें मातृत्व सुख से वंचित रहना पड़ा है। बावजुद इसके अमृता प्रीतम साहित्य जगत में अपनी मुकाम बनाने में काफी सफल रही है। अमृता प्रीतम ने साहित्य लेखन में शृंगार रस की कविताओं से पदार्पण किया। अमृता की विराट प्रतिभा का दर्शन उनके साठ वर्षों तक साहित्य की सेवा और सौ से अधिक पुस्तकों, कहानियों, कविताओं में होता है। अमृता प्रीतम की लेखनी, उपन्यास, कहानी, कविताओं में समान रूप से दखल रखती थी। उनकी लेखन-'शैली ने उनकी हर कृति को अमर कर दिया। अमृता प्रीतम की हिन्दी भाषा में उनके स्वयं के द्वारा रूपातंरित 28 उपन्यास, 15 कथा-संग्रह और 23 कविता सकंलित हैं। अमृता प्रीतम के उपन्यास, कहानियाँ और कविताओं के न केवल भारत में बल्कि विदेशों में लाखों पाठक रहे हैं। हिन्दी पाठकों के बड़े समूह ने अमृता प्रीतम के उपन्यासों को, अमृता प्रीतम की कविताओं को जिसमें देश के बँटवारे का दर्द मुखरित था जो वह मूल रूप से पंजाबी भाषा में रची गई थी, को काफी सराहा है।*

संकेत शब्द - *अमृता प्रीतम, व्यक्तित्व, कृतित्व, सम्मान, पुरूस्कार*

----------X----------

भूमिका

अमृता प्रीतम हिन्दी साहित्य मे एक बहुचर्चित नाम है। उनका बचपन और प्रारंभिक जीवन भले ही विभिन्न प्रकार की कठिनाईयों के साथ गुजरा है और उन्हें मातृत्व सुख से वंचित रहना पड़ा है। बावजुद इसके अमृता प्रीतम साहित्य जगत में अपनी मुकाम बनाने में काफी सफल रही है। अमृता प्रीतम ने साहित्य लेखन में शृंगार रस की कविताओं से पदार्पण किया। अमृता की विराट प्रतिभा का दर्शन उनके साठ वर्षों तक साहित्य की सेवा और सौ से अधिक पुस्तकों, कहानियों, कविताओं में होता है। अमृता प्रीतम की लेखनी, उपन्यास, कहानी, कविताओं में समान रूप से दखल रखती थी। उनकी लेखन-'शैली ने उनकी हर कृति को अमर कर दिया। अमृता प्रीतम की हिन्दी भाषा में उनके स्वयं के द्वारा रूपातंरित 28 उपन्यास, 15 कथा-संग्रह और 23 कविता सकंलित हैं। अमृता प्रीतम के उपन्यास, कहानियाँ और कविताओं के न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी लाखों पाठक रहे हैं। हिन्दी पाठकों के बड़े समूह ने अमृता प्रीतम के उपन्यासों को, अमृता प्रीतम की कविताओं को जिसमें देश के बँटवारे का दर्द मुखरित था जो वह मूल रूप से पंजाबी भाषा में रची गई थी, को काफी सराहा है।

अमृता प्रीतम: व्यक्तित्व

अमृता प्रीतम का जन्म 31 अगस्त 1919 में अविभाजित भारत, विभाजन के बाद पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के गुजराँवाला में हुआ था। माता 'राजबीबी' और पिता 'नंदसाधु' की पुत्री के रूप में पिता ने इस कन्या को अपना उपनाम पीयूष समर्पित किया था। 'पीयूश' के पंजाबी अर्थ के आधार पर ही इस कन्या का नाम अमृता रखा गया। अमृता कौर की माता का देहांत 31 जुलाई सन् 1930 में हो गया था, जब बालिका अमृता केवल 11वर्ष की थी और सिक्ख-पंथ के प्रचारक के रूप में अपने पिता के साथ संगत करती थी। माता

www.ignited.in

के देहांत के बाद अमृता कौर पिता के साथ लाहौर आ गई, जहाँ विवाह पश्चात् भारत आने तक वह वहीं रही। अमृता की सगाई बाल्यकाल में ही हो गई। माता के देहांत के बाद उन्होंने अपना एकाकीपन दूर करने के लिए कम उम्र में ही लेखन-कार्य प्रारंभ किया। अमृता प्रीतम ने कविता की बारीकियाँ अपने पिता से सीखीं, जो धार्मिक-गाथाओ के रूप में थीं। उनकी पहली कविता-संकलन 'अमृता लहर' का प्रकाशन 1936 मे हुआ, जब वह केवल 16 वर्ष की थी, यहीं से अमृता की रचना-यात्रा प्रारंभ हुई। 1936 से 1943 के मध्य इनकी कई कविताएँ प्रकाशित हुई। उनका विवाह प्रीतम सिंह से होने के बाद उनका नाम 'अमृता प्रीतम' पड़ा।

अमृता प्रीतम पंजाब की सबसे लोकप्रिय महिला-लेखिका के रूप में अपनी पहचान बनाई है। वे पंजाबी भाषा की पहली कवियत्री थीं। 1960 में पति से तलाक होने पर उन्होंने साहित्य-सृजन को अपना कार्य क्षेत्र चुना। अमृता प्रीतम ने अपनी रचनाओ में अपने पति का कहीं भी उल्लेख नहीं किया। उन्होंने 'सहयात्री' या 'अब साथ नहीं रहा जा सकेगा' जैसे शब्दों से संबोधित किया। अमृता ने इस विवाह-विच्छेद के दर्द को चुपचाप सह लिया, इस विच्छेद के लिए न तो उन्हांेने अपने पति से कोई विवाद किया न उन्हें प्रताड़ित किया और न ही उनसे कभी अप्रसन्नता जाहिर की। अमृता ने अपने विवाह-विच्छेद को कभी नहीं छुपाया, अपितु 1994 में अपने जीवनी के रूप मे लिखित पुस्तक 'रसीदी टिकट' में उल्लेख भी किया है। अमृता प्रीतम के विवाह-विच्छेद के समय उनके दो बच्चे थे, बड़ी लड़की जिसका जन्म 23 अप्रैल 1946 में और बेटा जिनका जन्म जुलाई, 1947 में हुआ था ।

काफी संघर्ष पूर्ण रहा अमृता जी का प्रारंभिक जीवन

पंजाबी भाषा की सर्वश्रेष्ठ कवियत्री अमृता प्रीतम जी 31 अगस्त, 1919 में गुजरांवाला पंजाब, (जो कि अब पाकिस्तान में है) में जन्मीं थी। इनकी शिक्षा लाहौर से हुई। बचपन से ही उन्हें पंजाबी भाषा में कविता, कहानी और निबंध लिखने में बेहद दिलचस्पी थी, उनमें एक कवियत्री की झलक बचपन से ही दिखने लगी थी। वहीं जब वह महज 11 साल की थी, तब इन पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा, उनके सिर से मां का साया हमेशा के लिए उठ गया, जिसके बाद उनके नन्हें कंधों पर घर की सारी जिम्मेदारी आ गई। इस तरह इनका बचपन जिम्मेदारियों के बोझ तले दब गया।

सोलह साल की उम्र में प्रकाशित हुआ प्रथम संकलन

अद्भुत प्रतिभा की धनी अमृता प्रीतम जी उन महान साहित्यकारों में से एक थीं, जिनका केवल 16 साल की उम्र में ही पहला संकलन प्रकाशित हो गया था। 1947 में अमृता प्रीतम जी ने भारत-पाकिस्तान के बँटवारे को बेहद करीब से देखा था और इसकी पीड़ा महसूस की थी। उन्होंने 18 वीं सदी में लिखी अपनी कविता "आज आँखा वारिस शाह शाहनूँ" में भारत-पाक विभाजन के समय में अपने गुस्से को इस कविता के माध्यम से दिखाया था, साथ ही इसके दर्द को बेहद भावनात्मक तरीके से अपनी इस रचना में पिरोया था।उनकी यह कविता काफी लोकतप्रिय भी हुई थी और इसने उन्हें साहित्य में एक अलग पहचान दिलवाई। आजादी मिलने के बाद भारत-पाक बँटबारे के समय इस महान कवियत्री अमृता प्रीतम जी का परिवार भारत की राजधानी दिल्ली में आकर बस गया। हालांकि भारत आने के बाद भी उनकी लोकप्रियता पर कोई फर्क नहीं पड़ा। भारत-पाक दोनों ही देश के लोग उनकी कविताओं को उतना ही पसंद करते थे, जितना कि वे विभाजन से पहले करते थे। भारत आने के बाद अमृता प्रीतम जी ने पंजाबी भाषा के साथ-साथ हिन्दी भाषा में लिखना शुरु कर दिया।

अमृता प्रीतम जी का विवाह एवं निजी जीवन

पंजाबी साहित्य को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलवाने वाली इस लोकप्रिय लेखिका व कवियत्री का विवाह केवल 16 साल की उम्र में प्रीतम सिंह से हुआ था, हालांकि उनकी यह शादी काफी दिनों तक नहीं चल पाई थी। सन् 1960 में अमृता जी का अपने पति के साथ तलाक हो गया था।वहीं अमृता प्रीतम जी की आत्म कथा 'रशीदी टिकट' के मुताबिक प्रीतम सिंह से तलाक के बाद कवि साहिर लुधियानवी के साथ उनकी नजदीकियाँ बढ़ गईं, लेकिन फिर जब साहिर की जिंदगी में गायिका सुधा मल्होत्रा आ गई तो उनका वह सम्बन्ध जीवन की दौड़ में पीछे छूट गया। उसी दौरान अमृता प्रीतम जी की मुलाकात आर्टिस्ट और लेखक इमरोज से हुई है, जिनके साथ उन्होंने अपना बाकी जीवन व्यतीत किया। आज भी दिल्ली के होजखास में स्थित उनका घर अमृता व इमरोज के जिन्दगी के खूबसूरत लम्हों की यादगार है।अमृता जी की प्रेम कहानी उनके जीवन पर आधारित विभिन्न घटनाओं तथा वास्तविकताओं पर आधारित है। अमृता इमरोज लव स्टोरी नाम की एक किताब भी लिखी गयी है। अमृता प्रीतम के बारे में यह भी कहा जाता है कि उन्होंने ही लिव-इन-रिलेशनशिप की शुरुआत की थी।

अमृता प्रीतम जी की मृत्यु

काफी लंबी बीमारी के चलते 31 अक्टूबर, 2005 को 86 साल की उम्र में उनका देहांत हो गया। इस तरह महान कवियत्री अमृता प्रीतम जी की कलम हमेशा के लिए रुक गई। वहीं

आज अमृता प्रीतम भले ही इस दुनिया में नहीं है, लेकिन आज भी उनके द्वारा लिखित उनके उपन्यास, कविताएँ, संस्मरण, निबंध, उनकी मौजूदगी का एहसास करवाते हैं।वहीं इस महान लेखिका के सम्मान में 31 अगस्त, 2019 को, उनकी 100वीं जयंती पर गूगल ने भी बेहद खास अंदाज में डूडल बनाया है।

अमृता जी के साहित्य पर खुशवन्त सिंह की टिप्पणी

खुशवन्त सिंह जिनका जन्म 2 फरवरी, 1915 और मृत्यु 20 मार्च, 2014, भारत के एक प्रसिद्ध पत्रकार, लेखक, उपन्यासकार और इतिहास कार थे। एक पत्रकार के रूप में उन्हें बहुत लोकप्रियता मिली। उन्होंने पारम्परिक तरीका छोड़ नये तरीके की पत्रकारिता शुरू की। भारत सरकार के विदेश मन्त्रालय में भी उन्होंने काम किया। 1980 से 1986 तक वे राज्यसभा के मनोनीत सदस्य रहे।खुशवन्त सिंह जितने भारत में लोकप्रिय थे उतने ही पाकिस्तान में भी लोकप्रिय थे। उनकी किताब ट्रेन टू पाकिस्तान बेहद लोकप्रिय हुई। इस पर फिल्म भी बन चुकी है। उन्हें पद्म भूषण और पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन एक जिन्दादिल इंसान की तरह पूरी कर्मठता के साथ जिया।

सरहद पर बर्बादी के मंजर

अमृता प्रीतम को 1947 में लाहौर छोड़कर भारत आना पड़ा था और बंटवारे पर लिखी उनकी कविता अज्ज आखां वारिस शाहनूँ सरहद के दोनों ओर उजड़े लोगों की टीस को एक सा बयां करती है कि दर्द की कोई सरहद नहीं होती। इस कविता में अमृता प्रीतम कहती हैं, जब पंजाब में एक बेटी रोई थी तो (कवि) वारिस शाह तूने उसकी दास्तान लिखी थी, हीर की दास्तान. आज तो लाखों बेटियाँ रो रही हैं, आज तुम कब्र में से बोलो ..उठो अपना पंजाब देखो जहाँ लाशें बिछी हुई हैं, चिनाब दरिया में अब पानी नहीं खून बहता है. हीर को जहर देने वाला तो एक चाचा कैदों था, अब तो सब चाचा कैदों हो गए। बंटवारे के दौरान अमृता प्रीतम गर्भवती थी और उन्हें सब छोड़कर 1947 में लाहौर से भारत आना पड़ा। उस समय सरहद पर हर ओर बर्बादी के मंजर था, तब ट्रेन से लाहौर से देहरादून जाते हुए उन्होंने कागज के टुकड़े पर एक कविता लिखी उन्होंने उन तमाम औरतों का दर्द बयान किया था जो बंटवारे की हिंसा में मारी गईं, जिनका बलात्कार हुआ, उनके बच्चे उनकी आँखों के सामने कत्ल कर दिए गए या उन्होंने बचने के लिए कुँओं में कूदकर जान देना बेहतर समझा। बरसों बाद भी पाकिस्तान में वारिस शाह की दरगाह पर उर्स पर अमृता प्रीतम की ये कविता गाई जाती रही अमृता प्रीतम दूरदर्शन को दिए अपने इंटरव्यू में बताती हैं, एक बार एक सज्जन पाकिस्तान से आए और मुझे केले दिए. उस व्यक्ति को वो केले एक पाकिस्तानी ने ये कहकर दिए कि क्या आप अज्ज

औरतों को आवाज देने वाली कलम

बरसों पहले अमृता प्रीतम की एक पुरानी इंटरव्यू में उनकी आवाज में ये पंक्तियाँ सुनी थी- कोई भी लड़की, हिंदू हो या मुस्लिम, अपने ठिकाने पहुँच गई तो समझना कि पूरो (एक लड़की का नाम) की आत्मा ठिकाने पहुँच गई लेकिन इन पंक्तियाँ का मतलब क्या है तब पूरी तरह समझ में नहीं आया था। फिर एक दिन पिंजर नाम की एक किताब पढ़ने को मिली जो अमृता प्रीतम ने लिखी है और उसी पर पिंजर नाम से बनी हिंदी फिल्म देखी। उपन्यास पिंजर पूरो (उर्मिला मातोंडकर) नाम की एक हिंदू लड़की की कहानी है जो भारत के बंटवारे के वक्त पंजाब में हुए धार्मिक तनाव और दंगों की चपेट में आ जाती है। पूरो सगाई के बाद अपने होने वाले पति रामचंद के सपने देखती है, लेकिन उससे पहले ही उसे एक मुस्लिम युवक उठा ले जाता है और निकाह कर लेता है। माँ बनने के अपने एहसास को पूरो अपने तन-मन के साथ हुआ धोखा मानती है। इसी बीच दंगों में भड़की हिंसा के दौरान एक और लड़की अगवा कर ली जाती है, लेकिन पूरो अपनी जान जोखिम में डाल उस लड़की को एक और पूरो बनने से बचा लेती है और सही सलामत उस लड़की को उसके पति को सौंपती है जो उसका अपना सगा भाई था और तब उसके मन से ये अलफाज निकलते हैं- कोई भी लड़की, हिंदू हो या मुस्लिम, अपने ठिकाने पहुँच गई तो समझना कि पूरो की आत्मा ठिकाने पहुँच गई और एक नई समझ के साथ जब आप पूरो के ये शब्द सुनते हैं तो मन में एक सिहरन सी उठती है। जिस तरह उन्होंने औरत के मन और उसकी इच्छाओं, उसके भीतर छुपे खौफ, उसके साथ हुई ज्यादतियों और उसके सपनों को अलफाज दिए हैं वो उस दौर के लिए अनोखी बात थी।

अज्ज आखां वारिस शाहनूँ

बाद के सालों में भी उन्होंने कई ऐसी कहानियाँ लिखीं जो औरत और मर्द के रिश्तों को औरत के नजरिए से टोटलती रहीं- मसलन उनके उपन्यास धरती, सागर ते सीपियाँ जिस पर 70 के दशक में शबाना आजमी के साथ कादंबरी फिल्म बनी- एक ऐसी लड़की की कहानी जो बिना शर्त प्यार करती है और जब सामने वाला प्यार पर शर्त लगाता है तो अपनी मोहब्बत को बोझ न बनने देने का रास्ता भी अपने लिए खुद चुनती है।

अमृता और साहिर लुधियानवी के रिश्ते

रसीदी टिकट शायद वो टिकट वाली बात अमृता प्रीतम के मन में घर कर गई थी. बाद में उन्होंने अपनी आत्मकथा लिखी तो उसका नाम रखा था रसीदी टिकट जिसमें साहिर लुधियानवी से जुड़े कई किस्से भी हैं रसीदी टिकट में अमृता प्रीतम लिखती हैं, वो (साहिर) चुपचाप मेरे कमरे में सिगरेट पिया करता. आधी पीने के बाद सिगरेट बुझा देता और नई सिगरेट सुलगा लेता। जब वो जाता तो कमरे में उसकी पी हुई सिगरेटों की महक बची रहती। मैं उन सिगरेट के बटों को संभाल कर रखतीं और अकेले में उन बटों को दोबारा सुलगातीं। जब मैं उन्हें अपनी उंगलियों में पकड़ती तो मुझे लगता कि मैं साहिर के हाथों को छू रही हूँ। इस तरह मुझे सिगरेट पीने की लत लगी अमृता और साहिर का रिश्ता ताउम्र चला लेकिन किसी अंजाम तक न पहुंचा। इसी बीच अमृता की जिंदगी में चित्रकार इमरोज आए। दोनों ताउम्र साथ एक छत के नीचे रहे लेकिन समाज के कायदों के अनुसार कभी शादी नहीं की। इमरोज अमृता से कहा करते थे- तू ही मेरा समाज है और ये भी अजीब रिश्ता था जहाँ इमरोज भी साहिर को लेकर अमृता का एहसास जानते थे। बीबीसी से इंटरव्यू में इमरोज ने बताया था, अमृता की उंगलियाँ हमेशा कुछ न कुछ लिखती रहती थीं... चाहे उनके हाथ में कलम हो या न हो। उन्होंने कई बार पीछे बैठे हुए मेरी पीठ पर साहिर का नाम लिख दिया। लेकिन फर्क क्या पड़ता है. वो उन्हें चाहती हैं तो चाहती हैं. मैं भी उन्हें चाहता हूँ.। अमृता की जिंदगी के कई आयाम थे। ओशो से भी उनका जुड़ाव रहा और उनकी किताब की भूमिका भी उन्होंने लिखी बचपन में ही माँ की मौत, बंटवारे का दर्द, एक ऐसी शादी जिसमें वो बरसों घुट कर रहीं, साहिर से प्रेम और फिर दूरियाँ और इमरोज का साथ.. अमृता प्रीतम का जीवन कई दुखों और सुखों से भरा रहा अमृता प्रीतम और साहिर लुधियानवी की प्रेम कहानी वो अफसाना जिसे अंजाम तक लाना मुमकिन न हो इश्क अमर होता है, वो सरहदों, जातियों, मजहब या वक्त के दायरे में नहीं बांधा जा सकता. मोहब्बत की कहानियां, किरदारों के गुजर जाने के बाद भी जिंदा रहती हैं। ये एक ऐसी शय है कि इसके खरीदार जमाने के बाजार में हमेशा रहते हैं।

आज की नस्ल को साहिर

अमृता की मोहब्बत का अफसाना एक फिल्म के जरिए सुनाने की तैयारी हो रही है। हाल ही में खबर आई है कि इरफान को साहिर का किरदार निभाने के लिए साइन किया गया है। इस फिल्म को लेकर निर्माता आशी दुआ अपनी चुप्पी नहीं तोड़ते, मगर, फिल्म से पहले हम साहिर-अमृता की अनूठी मोहब्बत को तो याद कर ही सकते हैं। कैसे हुई अमृता साहिर के रिश्ते की शुरुआत ये सिलसिला आज से करीब 73 बरस पहले शुरू हुआ था। बात 1944 की है, जब उस वक्त बड़ी तेजी से उभर रहे शायर साहिर लुधियानवी पहली बार लेखिका अमृता प्रीतम से मिले थे। जगह थी लाहौर और दिल्ली के बीच स्थित प्रीत नगर। किस्मत का फेर देखिए कि मोहब्बत के इस अफसाने का आगाज ऐसी जगह से हुआ जिसका नाम ही प्रीत नगर यानी प्यार की नगरी था। साहिर जुनुनी और आदर्शवादी थे. अमृता बेहद दिलकश. अपनी खूबसूरती में भी और अपनी लेखनी में भी. दोनों एक मुशायरे में शिरकत के लिए प्रीत नगर पहुंचे थे. मद्धम रोशनी वाले एक कमरे में दोनों की आंखें चार हुईं और बस प्यार हो गया। मगर, प्यार की ये कहानी उस दिशा में चल पड़ी, जिसका न कोई ओर-छोर था न इससे पहले कोई मिसाल मिलती है। अमृता प्रीतम और साहिर लुधियानवी की प्रेम कहानी वो अफसाना जिसे अंजाम तक लाना मुमकिन न हो। अमृता प्रीतम और साहिर लुधियानवी की प्रेम कहानी वो अफसाना जिसे अंजाम तक लाना मुमकिन न हो साहिर के साथ अमृता मोहब्बत की कहानियां, किरदारों के गुजर जाने के बाद भी जिंदा रहती हैं। ये एक ऐसी शय है कि इसके खरीदार जमाने के बाजार में हमेशा रहते हैं।

साहिर जुनुनी और आदर्शवादी थे. अमृता बेहद दिलकश. अपनी खूबसूरती में भी और अपनी लेखनी में भी. दोनों एक मुशायरे में शिरकत के लिए प्रीत नगर पहुंचे थे। मध्यम रोशनी वाले एक कमरे में दोनों की आंखें चार हुईं और बस प्यार हो गया। मगर, प्यार की ये कहानी उस दिशा में चल पड़ी, जिसका न कोई ओर-छोर था न इससे पहले कोई मिसाल मिलती है।

इमरोज के साथ अमृता

जिस वक्त अमृता, साहिर से मिलीं, वो प्रीतम सिंह से ब्याही हुई थीं। ये शादी अमृता के बचपन में ही तय कर दी गई थी। अमृता अपनी शादीशुदा जिंदगी में खुश नहीं थीं। साहिर से मिलने के बाद उनकी जिंदगी में खुशी की एक नई लहर आई। अमृता दिल्ली में रहती थीं. साहिर लाहौर में. दो मोहब्बत करने वालों के बीच की इस दूरी को दूर किया खतों ने. जिस्म दूर थे. मगर दिल करीब और रूह एक. सो, कागज पर इश्क उकेरा जाता रहा. कभी स्याह तो कभी सुर्ख. रौशनाई ने मोहब्बत में रंग भरे. प्यार के पैगाम की लाहौर और दिल्ली के बीच आमदो-रफ्त रही। अमृता के खतों को पढ़ें तो मालूम होता है कि वो साहिर के इश्क में दीवानी हो चुकी थीं. अमृता उन्हें मेरा शायर, मेरा महबूब, मेरा खुदा और मेरा देवता कहकर पुकारती थीं।

अमृता के साथ बंध सकते थे साहिर

साहिर की जीवनी 'साहिर अ पीपुल्स पोएट' लिखने वाले अक्षय मानवानी कहते हैं कि अमृता वो इकलौती महिला थीं, जो साहिर को शादी के लिए मना सकती थीं। एक बार साहिर लुधियानवी ने अपनी मां सरदार बेगम से कहा भी था कि वो अमृता प्रीतम थी, जिससे मैं बेपनाह मोहब्बत करता था, वो आप की बहू बन सकती थी।लेकिन, साहिर शायर भी थे. और शायर का जुनून किसी बंदिश में बंधने को राजी नहीं होता। यही साहिर के साथ भी हुआ। उन्होंने अमृता से मोहब्बत तो की, मगर अधूरी, वो दिलों के फासले तय नहीं करना चाहते थे। वो एक दूसरे को खत तो लिखते थे, मगर दोनों की मुलाकात बमुश्किल ही होती थी, और जब दोनों मिले तो खामोशी के साए में।

अमृता का गंदा कप साहिर के घर गए

हालांकि साहिर और अमृता के इश्क का खात्मा साहिर के सुधा मल्होत्रा की तरफ झुकाव से हुआ. मगर वो कभी अमृता को दिल से निकाल नहीं पाए. विनय शुक्ला, संगीतकार जयदेव से सुना एक किस्सा बताते हैं. एक बार जयदेव, साहिर के घर गए. दोनों किसी गाने पर काम कर रहे थे. तभी जयदेव की नजर एक गंदे कप पर पड़ी. उन्होंने साहिर से कहा कि ये कप कितना गंदा हो गया है, लाओ इसे साफ कर देता हूं. तब साहिर ने उन्हें चेताया था, उस कप को छूना भी मत. जब आखिरी बार अमृता यहां आई थी तो उसने इसी कप में चाय पी थी। साहिर और अमृता की मोहब्बत वो अफसाना रही, जो खूबसूरत अंजाम तक नहीं पहुंच सकी. मगर ये इश्क एकदम अलहदा था, इससे इनकार नहीं किया जा सकता. अपने दौर में साहिर और अमृता ने जैसा प्यार किया, उसे समाज में पाप माना जाता था. मगर ये रिश्ता बेहद पाक था, जिसे खतों और खामोशी के जरिए दोनों ने बड़ी खूबसूरती से निबाहा अधूरी रह गई ख्वाहिशों वाले इस किस्से ने दो दिलों को मोहब्बत से लबरेज कर दिया. ये एक ऐसा अफसाना है, जो हमारे जहन में हमेशा रहेगा. भले ही साहिर ने इसे गुपचुप निभाया।

साहिर से पागलों की तरह इश्क करती थीं अमृता प्रीतम

आज भी इनके मोहब्बत के हैं चर्चे हैदराबाद मशहूर पंजाबी कवियित्री अमृता प्रीतम देश की उन कवियित्रियों में से एक हैं जिनकी मोहब्बत की कहानी आज भी मशहूर है। उनका जन्म 31 अगस्त, 1919 को पंजाब के गुंजरावाला में हुआ था। अमृता का बचपन लाहौर में बीता था और उन्होंने वहीं पढ़ाई भी की। उन्हें बचपन से ही लिखने का शौक था। माना जाता है वो पंजाबी भाषा की पहली कवियित्री हैं। समय से आगे की सोच रखने वालीं अमृता प्रीतम ने कभी भी समाज के लिए खुद को बदला नहीं। अमृता प्रीतम और गीतकार शायर साहिर लुधियानवी की प्रेम की कहानी आज भी काफी मशहूर है। उन्होंने अपने इश्क को दुनिया से कभी छिपाया भी नहीं। दोनों के बीच एक कोरे कागज का रिश्ता था।

साहिर से पहली मुलाकात

साहिर और अमृता प्रीतम की पहली मुलाकात साल 1944 में प्रीत नगर में हुई थी। अमृता एक मुशायरे में शामिल होने पहुंची थीं वहीं साहिर से मिलीं। अमृता जितनी सुंदर कविता और उपन्यास लिखती थीं, वे खुद भी उतनी ही खूबसूरत और दिलकश थीं। हालांकि अमृता प्रीतम पहले से शादीशुदा थी। बचपन में ही उनकी शादी प्रीतम सिंह से तय हो गई थी। अमृता अपनी शादीशुदा जिंदगी से कतई खुश नहीं थी और साहिर लुधियानवी के आने के बाद मानों उनके जीवन में खुशहाली की बहार आ गई।अमृता अपनी इस पहली मुलाकात के बारे खुद कहती हैं कि मुझे नहीं मालूम कि साहिर के लफ्जों की जादूगरी थी या उनकी खामोश नजर का कमाल था लेकिन कुछ तो था जिसने मुझे अपनी तरफ खींच लिया। आज जब उस रात को मुड़कर देखती हूं तो ऐसा समझ आता है कि तकदीर ने मेरे दिल में इश्क का बीज डाला जिसे बारिश की फुहारों ने बढ़ा दिया। बहुत कम लोगों को पता है कि अमृता और इमरोज एक घर में रहने के बावजूद अलग-अलग कमरों में रहते थे। शायद यही एक वजह है कि अमृता और साहिर के बीच नजदीकियां बढ़ती जा रही थीं।

अमृता प्रीतम: कृतित्व

अमृता प्रीतम जी की प्रमुख रचनाएं एवं कृतियाँ- पंजाबी भाषा की सर्वश्रेष्ठ एवं लोकप्रिय कवियत्री अमृता प्रीतम जी की गिनती उन साहित्यकारों में होती है, जिनकी रचनाओं का विश्व की कई अलग-अलग भाषाओं में अनुवाद किया गया है। अमृता जी ने अपनी रचनाओं में सामाजिक जीवन दर्शन का बेबाक एवं बेहद रोमांचपूर्ण वर्णन किया है। उन्होंने साहित्य की लगभग सभी विधाओं पर अपनी खूबसूरत लेखनी चलाई हैं। अमृता जी की रचनाओं में उनके लेखन की गंभीरता और गहराई साफ नजर आती है। विलक्षण प्रतिभा की धनी इस महान कवियत्री ने अपनी रचनाओं में तलाकशुदा महिलाओं की पीड़ा एवं शादीशुदा जीवन के कड़वे अनुभवों का व्याख्या बेहद खूबसूरती से की है।अमृता प्रीतम जी द्वारा रचित उपन्यास 'पिंजर' पर साल 1950 में एक अवार्ड विनिंग फिल्म पिंजर भी बनी थी, जिसने काफी लोकप्रियता हासिल की थी।

आपको बता दें कि अमृता प्रीतम जी ने अपने जीवन में करीब 100 किताबें लिखीं थीं, जिनमें से इनकी कई रचनाओं का अनुवाद विश्व की कई अलग-अलग भाषाओं में किया गया था। अमृता प्रीतम जी द्वारा लिखित उनकी कुछ प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार है:-

1. उपन्यास - पिंजर, कोरे कागज, आशू, पांच बरस लंबी सड़क उन्चास दिन, अदालत, हदत्त दा जिंदगीनामा, सागर, नागमणि, और सीपियाँ, दिल्ली की गलियां, तेरहवां सूरज, रंग का पत्ता, धरती सागर ते सीपीयां, जेबकतरे, पक्की हवेली, कच्ची सड़क।

2. आत्मकथा - रसीदी टिकट।

3. कहानी संग्रह: कहानियों के आंगन में, कहानियां जो कहानियां नहीं हैं।

4. संस्मरण: एक थी सारा, कच्चा आँगन।

5. कविता संग्रह: चुनी हुई कविताएं।

सम्मान और पुरस्कार:- अद्वितीय एवं विलक्षण प्रतिभा वाली महान कवियत्री अमृता प्रीतम जी को उनकी अद्भुत रचनाओं के लिए कई अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। आपको बता दें कि 1956 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित यह पहली पंजाबी महिला थी।इसके साथ ही भारत के महत्वपूर्ण पुरस्कार 'पद्म श्री' हासिल करने वाली भी यह पहली पंजाबी महिला थीं। इसके अलावा इन्हें पंजाब सरकार के भाषा विभाग द्वारा पुरस्कार समेत 'ज्ञानपीठ' आदि पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। अमृता प्रीतम जी के दिए गए पुरस्कारों की सूची निम्नलिखित है -

साहित्य अकादमी पुरस्कार (1956), डॉक्टर ऑफ लिटरेचर (जबलपुर युनिवर्सिटी- 1973), फ्रांस सरकार द्वारा सम्मान (1987) पद्मश्री (1969), पद्म विभूषण (2004), भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार (1982), बल्गारिया वैरोव पुरस्कार (बुल्गारिया द्द 1988), डॉक्टर ऑफ लिटरेचर (दिल्ली युनिवर्सिटी- 1973), डॉक्टर ऑफ लिटरेचर (विश्व भारती शांतिनिकेतन- 1987)

अमृता प्रीतम को कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से नवाजा गया वे पहली महिला थीं जिन्हें साहित्य अकादमी अवार्ड मिला और साथ ही वे पहली पंजाबी महिला थी। जिन्हें पदमश्री अवार्ड से नवाजा गया। "कागज पै कैनवास" के लिए उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार भी मिला। उनके कृतित्व या रचनाओं का प्रारंभ तब से हुआ जब उनकी पहली कविता 'इंडिया किरण' में छपी तो पहली कहानी 1945 में कुंजियों में, मोहन सिंह जी द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'पज दरिया' ने अमृता की प्रारंभिक पहचान बनाई। सन् 1936 में अमृता की पहली किताब छपी। इससे प्रभावित होकर महाराजा कपूरथला ने बुजुर्गाना प्यार देते हुए दो सौ रूपये भेजे तो महारानी ने प्रेमवश पार्सल से एक साड़ी भिजवायी।

अमृता प्रीतम ने लगभग 100 रचनाएँ रची जिनमें कविता, कहानी, उपन्यास यात्रा संस्मरण और आत्मकथा आदि शामिल हैं। उन्होंने पंजाबी कविता की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक-एक अलग पहचान कायम की पर इसके बावजूद वे पंजाबी से ज्यादा हिन्दी लेखिका के रूप में जानी जाती हैं। यहाँ तक की विदेशों में भी उनकी रचनाएँ बड़े मनोयोग से पढ़ी जाती थीं। एक समय में राजकपूर की फिल्म देखना और अमृता प्रीतम की कविताएँ पढ़ना सोवियत संघ के लोगों का शगल बन गया था। अमृता जी की रचनाओं में सांझी संस्कृति की विरासत को आगे बढ़ाने और समृद्ध करने का पुट शामिल था।उन्हें अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार तो मिले ही साथ ही 1973 में दिल्ली विश्वविद्यालय ने अमृता को डी.लिट की उपाधि दी। पिंजर के फ्रेंच अनुवाद को फ्रांस का सर्वश्रेष्ठ साहित्य पुरस्कार प्राप्त हुआ। 1975 में अमृता के लिखे उपन्यास "धरती सागर और सीपियाँ" पर फिल्म बनी वहीं 'पिंजर' पर चन्द्रप्रकाश द्विवेदी ने फिल्म का निर्माण किया। पचास के दशक में 'नागार्जुन' ने अमृता की कई पंजाबी कविताओं के हिन्दी अनुवाद किए। अमृता प्रीतम राज्यसभा की भी सदस्य रहीं। विभाजन ने पंजाबी संस्कृति को बांटने की जो कोशिश की थी, वे उसके खिलाफ संघर्ष करती रही और कभी विभाजित नहीं होने दिया। साहित्य को समृद्ध करने हेतु वे 'नागमणि' नाम से एक मासिक पत्रिका भी निकालती रहीं।एक लेखक जीवन की व्याख्या करता है। वह समाज तथा आस-पास के वातावरण से प्रेरणा प्राप्त करता है। एक लेखक का जीवन उसकी कृतियों में पूर्ण रूप से झांका करता है, जो कार्य साधारण व्यक्ति व्याख्या से करता है उसे वह संकेत मात्र से कर लेता है। विश्व के सभी महान कवियों और लेखकों की रचनाओं में उनके जीवन की छाया परोक्ष रूप से प्राप्त होती है।

अमृता प्रीतम की कृत्तियाँ:- साहित्य की प्रत्येक विधा अपने सर्जक के व्यक्तित्व को स्पर्श रखती हैं। रचनाकार चाहे कवि हो या निबंधकार, नाटककार हो या उपन्यासकार, उसकी रचनाओं की विषयवस्तु चाहे ऐतिहासिक घटनाओं से संबंधित हो या सामाजिक सरोकार से काल्पनिक हो या यथार्थ पर आधारित वह अपनी रचना के माध्यम से अपने अनुभवों, विचारों तथा संवेदनाओं को ही अभिव्यक्त करता

है। रचना की बुनावट उसकी मानसिक संरचना के अनुसार ही विकसित होती है। 1960 में अपने पति से तलाक के बाद इनकी रचनाओं में महिला पात्रों की पीड़ा और वैवाहिक जीवन के कटु अनुभवों के अहसास को महसूस किया जा सकता है। विभाजन की पीड़ा को लेकर इनके उपन्यास पिंजर पर एक फिल्म भी बनी थी। जो अच्छी खासी चर्चा में रही। इन्होंने लगभग 100 पुस्तकें लिखी और इनकी काफी रचनाएँ विदेशी भाषाओं में अनुवादित हुई।

कहानी संग्रह:- 1. अंतिम पत्र, 2. एक लड़की एक शाप, 3. हीरे की कनी, 4. पाँच बरस लम्बी सड़क, 5. एक शहर की मौत, 6. वह आदमी वह औरत, 7. सत्रह कहानियाँ, 8. सात सौ बीस कदम, 9. दो खिड़कियाँ, 10. कच्चे रेशम-सी लड़की, 11. चूहे और आदमी में फर्क, 12. दीवारों के साये में इत्यादि।

प्रमुख उपन्यास:- 1. डॉक्टर देव, 2. पिंजर, 3. कैली कामिनी और अनीता, 4. नीना, 5. एक सवाल, 6. बुलावा, 7. बंद दरवाजा, 8. रंग का पता, 9. नागमणि, 10. सागर और सीपियाँ, 11. दिल्ली की गलियाँ, 12. जेबकतरे, 13. आक के पत्ते, 14.आक की लकीर, 15. जलावतन, 16. कच्ची सड़क, 17. कोई नहीं जानता, 18.उनकी कहानी, 19. यह सत्य है, 20. एक खाली जगह, 21. तेरहवाँ सूरज, 22.कोरे कागज, 23. हरदत्त का जिन्दगीनामा, 24. एक थी सारा एक खाली जगह दस्तावेज इत्यादि।

आत्मकथा:- 1. रसीदी टिकट, 2. अक्षरों के साये (संस्मरण) आदि।

काव्य संग्रह:- 1. धूप का टुकड़ा, 2. कागज और कैनवास, 3. चुनी हुई कविताएँ, 4. प्रतिनिधि कविताएँ।

निबंध संग्रह:- 1. अतीत की परछाइयों, 2. काला गुलाब, 3. इक्कीस पत्तियों का गुलाव, 4.औरत: एक दृष्टिकोण, 5. सफरनामा, 6. अपने-अपने चार चरस, 7. जंग जारी है, 8. शौक सुराठी, 9. कौन सी जिन्दगी कौन सा साहित्य, 10. कच्चे अक्षर, 11. एक हाथ मेंहदी एक हाथ छाला, 12. आज के काफिर, 13. कड़ी धूप का सफर, 14. अक्षर बोलते हैं, 15. देख कबीरा, 16. तीसरी आँख, 17. सात सवाल, 18. सात मुसाफिर, 19. सूरज बंशी चन्द्रवंशी, 20. सितारों के अक्षर और किरनों की भाषा, 21. नौ फूलों की व्यथा, 22. अक्षर कुण्डली, 23. अक्षरों की अंतध्वनि, 24. मन मिर्जा तन साहिवां इत्यादि।

सृजन-प्रेरणा और तत्कालीन परिवेश:- लेखकीय प्रेरणा के रूप में अमृता प्रीतम की रसीदी टिकट का मूल तत्व हम अमृता प्रीतम के ही शब्दों में ढूंढ सकते हैं-एक इमारत वह होती है जो बाहर की घटनाएँ, जिन्दगी के कारण पर लिखते हैं, लेकिन एक इबारत वह होती है, जो इंसान का अंतरमन, आत्मा के पर लिखता है।लेखन प्रेरणा की दृष्टि से अमृता प्रीतम का साहित्य अनन्य सदृश विद्या है क्योंकि अधिकांश रचनाएँ चाहे वो उपन्यास हो या कहानी, या कविता, अधिकांश वह लेखक के जीवन की सच्ची अनुभूतियों का ही प्रतिफल है। वह अंतः प्रेरणा भी हो सकती है और बाह्य प्रेरणा भी और जहाँ तक इस बात में कोई संदेह नहीं है कि किसी भी रचना लेखन के पीछे श्रेष्ठता का मूलमंत्र अंतःप्रेरणा है।

(I) **बाह्म प्रेरणा:-** बाह्म प्रेरणा का मतलब है-बाहरी लोगों के द्वारा दी गई प्रेरणा बाह्म प्रेरणा का एक कारण तो यह होता है कि लेखकों को परस्पर विनम्रता और अपने आप की बड़ाई से बच निकलने की प्रवृत्ति लेखकों में पाई जाती है।

(II) **आत्म प्रेरणा:-** अमृता प्रीतम ने अपने जीवन के विविध आयामों को अपने साहित्यिक सृजन में उकेरा है जो एक संपूर्ण जीवन ही नहीं बल्कि एक लेखक की सच्ची अनुभूति का अहसास अपनी लेखनी से करवाती है। एक लेखक अपनी आत्मा या भावनाओं की प्रबलता के कारण इतना अधिक बाध्य हो उठता है कि ऐसा लगता है मानों वेगवती तीव्र धारा अचानक फूट कर बहने लगी हो। भावनाएँ सबके मन में होती हैं। सभी लेखक या तो उस उच्चतम स्थिति को छूं नहीं पाते या संकोचवंश खुद को अभिव्यक्त नहीं करते।इस प्रकार आत्मा भी एक सशक्त माध्यम है जो एक लेखक को अंदर से प्रेरणा देती है। लिखने के लिए खुद को अभिव्यक्त करने के लिए और आत्मा की प्रेरणा अपेक्षाकृत प्रभावशाली भी है।

(III) **मिश्रित प्रेरणा:-** अमृता प्रीतम के संपूर्ण कथा साहित्य को देखते हुए ऐसा अनुभव होता है कि उनके लिखने के मूल में आत्मप्रेरणा और बाह्म प्रेरणा दोनों कार्य करती हैं। साहित्य सृजन में इन दोनों का होना आवश्यक है।

परिस्थितियों का प्रभाव

कोई भी लेखक या लेखिका परिस्थितियों के प्रभाव से प्रभावित होकर लिखता या लिखती है। अमृता प्रीतम भी कुछ ऐसी व्यक्तिगत, सामाजिक राजनीतिक परिस्थितियों से गुजरी कि उन्हें सवयं को इन परिस्थितियों से निकालने और

सामना करने के लिए लिखना ही पड़ा। जिसमें अमृता प्रीतम ने विविध आयामों में साहित्यिक सृजन किया।भारत का विभाजन, साहिर का अमृता से अलग होना, इमरोज से मुलाकात, पाकिस्तानी लेखकों द्वारा अमृता को प्रोत्साहित किया जाना, स्वयं के अकेलेपन को बांटना, अपने जीवन को पूर्णता की ओर ले जाने वाली परिस्थितियों की खोज ने अमृता को साहित्य सृजन कि ओर बढ़ावा मिला। उस स्थिति में लेखनी ही तो थी जो उसकी सच्ची दोस्त थी जिससे वह अपने आपको परिस्थिति के कुप्रभाव से बचा लेती है।

पिता द्वारा मिला प्रोत्साहन

अमृता प्रीतम के पिता नंद साधु अमृता के हाथ में कलम देकर उसे अगर उसके पिता द्वारा प्रोत्साहन न मिला होता, तो वह अपने जीवन में इतने बेबाक तरीके से कभी भी नहीं लिख पाती। स्वयं अमृता के शब्दों में-मेरे पिता को मेरे कविता लिखने पर आपत्ति नहीं थी, बल्कि काफिये रदीफ की बात मुझे मेरे पिता ने सिखायी थी, केवल उनका आग्रह था कि मैं धार्मिक लिखूं और मैं आज्ञाकारी बच्ची की तरह वहीं दकियानूसी रचनाएँ लिख देती थी। अमृता के पिता भी स्वयं लेखक थे। अमृता का उनके अलावा और कोई था भी नहीं इसलिए अमृता पर उनका प्रभाव पड़ना कोई आश्चर्य वाली बात नहीं होनी चाहिए।

अमृता का अकेलापन

अमृता की साहित्य सृजन में सबसे सशक्त प्रेरणा उसके स्वयं के अकेलेपन ने उसे दी। बचपन से ही वो अकेली रही। उसकी माँ का देहांत उस समय हो गया था, जब वह ग्यारह बरस की थी। घर में पिता के अलावा कोई नहीं था। उम्र के कोमल पड़ाव जैसे-जैसे पार करती गई उसे अपने दुःख-सुख बांटने वाले दोस्त की कमी महसूस हुई। अमृता स्वयं अपने बारे में लिखती हैं कि उनका अस्तित्व किसी न किसी रूप में हमेशा मेरे साथ रहा है-कभी मनुष्य के रूप में कभी कलम की सूरत में और कभी ईश्वर की जात की तरह एक से अनेक होते हुए और इसी अकेलेपन को उनकी कलम ने अमृता का अकेलापन जिन्दगी भर साथ रहा।

अमृता की उम्र के साथ बढ़ते अनुभव

अमृता के कोमल मन में कौंपलें सबसे पहले तब फूटने लगी, जब वह सोलह साल की थी अपने मनोभवों को व्यक्त करने के लिए लालायित इस पंजाबी लेखिका ने लिखना प्रारंभ कर दिया। उन्हीं के शब्दों में-मेरा सोलहवां वर्ष भी अवश्य ही ईश्वर की साजिश रहा होगा क्योंकि इसने मेरे बचपन की समाधि तोड़ दी थी। मैं कविताएँ लिखती और हर कविता मुझे वर्जित इच्छा की तरह लगती थी। किसी ऋषि की समाधि टूट जाए तो भटकने का शाप उसके पीछे पड़ जाता है-सोचो का शाप मेरे पीछे पड़ गया। यूं तो अमृता को अपने समकालीन कवि लेखकों से बड़े अहसास अनुभव हुए थे, लेकिन एक पाक दिल इंसान सज्जाद हैदर से जब उनका परिचय हुआ तो दोस्ती लफ्ज आंखों से झिलमिलाने लगे।इस प्रकार हम ये कह सकते हैं कि उम्र के साथ बढ़ते अनुभव ने जब विस्तार लेना प्रारंभ कर दिया तो वह केवल मात्र छोटी रचनाओं तक सीमित न रहा और उनके साहित्य में उफान उत्पन्न हो गया।

अमृता प्रीतम के साहित्य पर प्रभाव

भारत विभाजन के पूर्व एवं बाद की स्थितियों और बाद के परिवर्तनों का अमृता प्रीतम के साहित्य पर प्रभाव व्यक्ति समाज एवं राष्ट्र के जीवन में परिवर्तन हर युग में अवश्यंभावी है तथा उन जीवन मूल्यों, व्यक्ति चरित्र, सभ्यता व संस्कृति का मेरूदण्ड भी यह परिवर्तन है स्वतंत्रता के साथ ही देश में बहुमुखी परिवर्तन हुए जिन्होंने भारतीय चेतना को उग्रता से आंदोलित किया। स्वतंत्रता का सूर्य विभाजन की रक्तिम आभा लेकर उदित हुआ और यह विभाजन की त्रासदी भारतीय इतिहास का वह काला अध्याय है, जिसमें उस भीषण रक्तपात की कथा अमृता प्रीतम के पिंजर, डॉ. देव, नीना, उनके हस्ताक्षर आदि उपन्यासों में भी हम इस त्रासदी का मर्मस्पर्शी चित्रण देख सकते हैं।

अमृता प्रीतम की नारी-दृष्टि

अमृता प्रीतम के उपन्यासों में नारी के पक्ष में उजागर किया है जिसमें नारी विषयक दृष्टिकोण संसार में नारी की स्थिति, पीड़ा विडम्बना और विसंगतियों को मुखर किया गया है। उनके द्वारा रचित 'दीवारों के साय में' वास्तविक नारी चरित्रों पर लिखी अनेक कहानियाँ भी हैं। जिसमें लेखिका ने समाज की ओर मन की दीवारों से आरंभ करके कारगार की दीवारों तक इन सभी में बंद स्त्री पुरुषों का मार्मिक चित्रण किया है। उन्हीं के शब्दों में:

"तिरिया जनम झन देव या

काहे को दोनों यह मनुआ रामजी

काहे को दीनी यह काया।"

अमृता प्रीतम ने अपने उपन्यासों में नारी प्रेम के बदलते स्वरूप के दर्शन होते हैं साहित्य में एक विशिष्टता यह है कि इन्होंने नारी के जीवन में प्रेम संबंध को विशेष दृष्टिकोण से आंका है और उसकी समस्याओं का चित्रण किया है इस चित्रण में पुरुष कथाकारों की अपेक्षामहिला उपन्यासकारों ने

प्रेम के सब पर अधिक बल दिया। वह शायद इसलिए कि नारी की विगत, आगत और अनाह इस पर आधारित हैं इनके उपन्यासों में नारी और पुरुषों के संबंधों में मधुग्न भी है, कटुता भी है, निकटता भी है और दूरी भी प्रेम संबंधों के टूट जाने पर टूटती नारी का चित्रण भी है और इस स्थिति का सामना करने का साहस भी।इस प्रकार अमृता प्रीतम का नारी के प्रति अटूट दृष्टिकोण रहा है वह नारी की भूमिका को महत्ता देती है।

संदर्भ

1. शर्मा, कृष्ण कुमार (2014). शैली विज्ञान की रूपरेखा-जयपुर: सघी प्रकाशन।

2. कृष्ण कुमार (2014). गद्य संरचना: शैली वैज्ञानिक विवेचन-जयपुर: संधी प्रकाशन।

3. शर्मा, शशि कुमार (2014). शैली और क्रिया विशेषण-पटना: नालंदा प्रकाशन।

4. सक्सेना, द्वारिका प्रसाद (2014). भाषा विज्ञान के सिद्धांत और हिंदी भाषा मेरठ: मीनाक्षी प्रकाशन।

5. प्रीतम, अमृता (1996). धरती सागर और सीपियां. दिल्ली: हिंदु पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड।

6. प्रीतम, अमृता (2003). पिंजर. दिल्ली: हिंदु पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड।

7. गुरु, कामता प्रसाद (2011). हिंदी व्याकरण. जयपुर: पंचशील प्रकाशन।

8. गोस्वामी, कृष्ण कुमार (1996). शैलीविज्ञान और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की भाषा. दिल्ली: अभिव्यक्ति प्रकाशन।

Corresponding Author

Kamini Chugh*

Research Scholer